

May der

4/5 - 92 माघ १८८२ -

प्रिय राम -

मेरा पिछला वत, एक सफेद कागज था। सम के "सम सम" इसी की ओर से। Salutations, Ben Jean, आदर। सफेद कागज इसी की पाकीजगी इतनी अच्छी लगी कि बेकार लगा कि अपने आइसस या व्यालात से उसे गन्दा करूँ।

तुम्हारी (बानोशी) ल फिट हो (ही) है। ~~मुझे बात अच्छी~~  
~~बोली + भारत अकल के उधाल-में त आ (सि) और इसी~~  
~~बात के) बड़ी पीड़ा (ही) + बेहद बुरा (आ) है।~~ ~~मुझे तब असर~~  
~~हूँ। और यह पत्र गल्ली में लिखा हुआ था कि तुम मोपाल गये।~~  
 जानना चाहता हूँ वहाँ का आहोल कैसा था। रूपका संग्रह  
 आदिवासियों की कलाकृतियाँ, दोस्तों ~~यह~~ (कि तुम तो  
 लिखना जानते हो, और यह भी कि मैं बड़ी बंचैनी ल देश-  
 के समाचार जानना चाहता हूँ। फिर क्यों नहीं लिखते ?

२६ फरवरी को यहाँ से गँववे दूधियागल के निचे २ बड़े गये  
चित्र भिजाए थे । मालूम नहीं वे पहुँचे या नहीं । निख  
~~सोने के दूधियागल~~ देखा हा । निख सोने के कि मेरे  
चित्र और शक्ति चारमान के भी समय पर पहुँच गये  
रिचर्ड को कोई <sup>कबहुँ नहीं मिला</sup> ~~कन पत्र भेजा तो, नहीं मिला और~~  
हमने उसे ~~दो~~ तीन दिन ३ खत और तार भी भेजे हैं ।

म. प्रदेश के  
नियम यह  
चला  
पडा  
महलपूर  
डा / पा  
दुर्ग  
धर

Coins, Indore Museum.

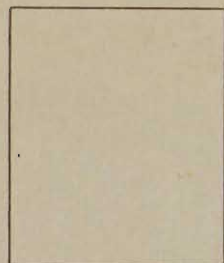
नव वर्ष की शुभ कामनायें.

Best wishes for  
a happy new year

Dr. राजदेव

29-12-81

Bhopal INDIA



To,

~~SHRI~~ SHRI S. H. RAZA

PARIS





जिनेवा में भी जो बुझा मित्र हैं उनका पता है -

Dr. S.T. MERANI

CASE POSTALE 266

31, MOISE DUBOULE

PETIT SAONNEX

1211, GENEVA-19 SWITZERLAND

(Tel. 98 46 30)

मैं जिनेवा में इनके घर पर ही रहूंगा।

बाली-यहां सब ठीक चल रहा है। जोशों से काम में

लगा हुआ हूँ। पत्नी और-बच्चे सब मजे में हैं।

दूसरे पहले आपको एक पत्र भेजा था करीब 2 सप्ताह पहले

मिला होगा।

आपने गोव में (GORBIO) आने की बहुत

इच्छा है। शायद इस बार योग आये।

सुदेश ठीक है। हमें रोज ही मिलते हैं वो भी

काजकल कर रहा काम कर रहा है। ओम पुकाश चौधरिया

भी ठीक है। वाजपेयी जी काजकल करते हैं इसलिये

मिलना कम ही हो पाता है।

पत्र अवश्य लिखिये

आपका

S. Nagdev

(S. NAGDEV)

श्री रत्ना सा.

स्वादाय प्रणाम,

मेरा पिछला पत्र भिला होगा, उसमें मैंने २० जून से जिनेवा में पुद्गुनी के बारे में लिखा था। वो पुद्गुनी अब कुछ महिनों के लिये आगे बढ़ गयी है। नयी तारिख तय होने पर मैं आपको लिखूंगा।

कारण ये हुआ कि मेरे मित्र जो वहां सारी व्यवस्था कर रहे थे - उनको अचानक कुछ महिनों के लिये जिनेवा से बाहर जाना पड़ गया है। इसलिए उन्होंने पुद्गुनी स्थगित कर दी है।

बाकी सब ठीक है। अशोक जी आज ही जापान जा रहे हैं वहां यूनेस्को के लैरवल सम्मेलन में भाग लेंगे। १०-१५ दिन में वापस आयेंगे। मेरा काम इन दिनों आपकी दुआ से अच्छा चल रहा है। सुरेश जी इन दिनों गौरी से काम कर रहा है। सितम्बर में उसकी पुद्गुनी-कम्बर्इ की ताजा गेलरी में है।

बाकी सब आपकी कृपा है।

आपका

र. नागदेव

६



श्री राजा सा.

बहुत दिनों से आपकी ओर से मुझे कोरिपत्र नहीं आया है। वैसे सुदेश के पास पत्र आये हैं और उसमें आपने मुझे भी लिखा है। कोपेनहेगन आकर लॉग और भारतीय-समाचार पत्र तथा इन्टरनेटम कला प्रदर्शनी और पत्रिका के चित्र सुदेश के वहां मैंने देखे। आपका नाम बहुत ज़ोरों से चल रहा है ये जानकर बहुत ही खुशी हुई।

दो दिन पहले मैं दिल्ली गया था। भिनाले के उद्घाटन के समय वहां आपके दो बड़े पेंटिंग देखे। आपके वो पेंटिंग मुझे इतने अच्छे लगे कि मैं शब्दों में वर्णन नहीं कर सकता। वो बहुत ही सशक्त पेंटिंग है और उनके रंगों का बचाव करना। गजब है। उनके चित्र इतने हैं जो भोज रहा है।

इस बार मेरा यूरोप आना हो सकेगा। जिनेवा में 20 जून से मेरे चित्रों की प्रदर्शनी है। मैं एक बुजुर्ग मित्र वहां रहते हैं उन्होंने व्यवस्था की है। यदि आप उस समय जिनेवा आ सकें तो मुझे बहुत बल मिलेगा। वैसे मैं फ्रांस आकर आप लोगों से रुचय मिलूंगा। सुना है फ्रांसीसी बीसा जरा मुश्किल से आजकल मिलता है, तो कृपया मुझे बुलाने के लिये ऐसा एक पत्र लिख दें मुझे जिससे बीसा मिलने में आसानी हो सके फ्रांस आने के लिये।

जिनेवा में गैलरी कार्य पता है - GALERIE "TROIS MOUSQUETAIRES"

4, CHEMIN DES CORNILLONS

CHAMBESY, GENÈVE

Tel. (022) 58 11 12



BY AIR MAIL  
PAR AVION



100 भारत INDIA



100 भारत INDIA



100 भारत INDIA



5 भारत INDIA



To,

Mr. S.H. RAZA

101, RUE DE CHARONNE

2, CITE DU COUVENT

75011 PARIS

FRANCE.



FROM - S. NAGDEV  
5/127 RAVISHANKAR NAGAR  
BHOPAL - 462016  
INDIA.

Bhopal  
5 मार्च 1982

SACHIDA NAGDEV

5/127 RAVISHANKAR NAGAR BHOPAL - 462016 INDIA.

आदरणीय रजा सा.

आपका पत्र बहुत दिनों से नहीं आया।

सुरेश के पास एक पत्र आया था, जिसमें मुझे भी लिखा था, जो मैंने पढ़ लिया। बाद में एक पुद्गलिका का केटलॉग (५ पिक्चरों का) और भारतीय दूतावास की पत्रिका में आपके बारे में पढ़ा। उस पत्रिका में जो आपकी पेंटिंग छपी है वो बहुत ही सुंदर लगी।

यहां पिछले महीने 'भारत भवन' का उद्घाटन बहुत ही बड़े पैमाने पर हुआ। प्रधानमंत्री ने प्रशंसा की। सुरेश ने आपको अलबार्स की कारिंग भेजी है।

मेरी पुद्गलिका जनवरी में जलापरिषद में कलियार उत्सव में लगाई थी। अब मैं जिससे काम कर रहा हूँ - मेरे जिनेवा में रहने वाले एक मित्र वहां पुद्गलिका लगाने की कोशिश में हैं। उन्होंने किसी गैलरी से जून माह में लगाने की बात की है। यदि ये सब जमता है तो मैं जून के प्रथम सप्ताह में जिनेवा जाऊंगा। और यूरोप आया तो आपसे अवश्य मिलूंगा। इस बारे में अगले पत्र में विस्तार से लिखूंगा।

ये जानकर बहुत खुशी हुई कि आपका काम बहुत जोरदार चल रहा है और कई महत्वपूर्ण पुद्गलिकाएं लगाने वाली हैं।

आपके पत्र की प्रतिक्रिया में

सुरेश, कामपुकाहा सब ठीक हैं।

आपका  
र. नागदेव-



Paris, March 16, 1982.

प्रिय सचिद -

तुम्हारा पत्र मिला । लिखने की इच्छा बहुत थी, पर काम की  
बहुत ऐसी उलझावत रही है कि लिख न पाया । और आज भी ये दो शब्द  
मस्ती में ।

तुम्हारे जापान की प्रदर्शनी और यात्रा के बारे में तुम्हारे पत्र  
से (बहर) मिली थी, और प्रवेश करने एक लेख से भी समाचार मिले तुम्हारा  
Catalogue भी मिला । मुझे प्यारी है, इस सफलता के जनक, और यह  
भी कि तुम एकाग्रता से काम कर रहे हो ।

आपका बया हान लिखें । हर पत्र एक ही शब्द से शुरू होते हैं :  
"यस्तता" । इसी लिये आप सब के लिये एक ही पत्र (प्रेष) का भिजा  
था । (कभी है कि आप सगाह रहे हैं, और प्रवेश ने कई दिन बराबर  
आवगारों की करिंग भिजाई । कई चित्रों में भी पत्र लिये चिन्ता से  
भर भवन के उद्घाटन के समाचार मिले । मुझे बेहद आनंद है कि  
कि इस समय भोपाल में ~~आ~~ उपाश्रित न हो सका, अशोक के पत्र आता  
भी आये । हमारी प्रसाद गौड़िवेदी के शब्दों में :

"... अपना रथ पै हम जोते रहे ।"

फिरा और स्टोफहेम के बाद बर्न स्विटजरलैण्ड की सैरगती है ।  
इसी बीच में मध्य फ्रांस - PRIVAS में जार्जिन के साथ मई में एक प्रदर्शनी  
और GRENoble में एक Allium. सब से अधिक चिन्ता तो वर्ग की फूल  
प्रदर्शनी की है, जो आफइला २२ में होने वाली है । इसी बीच में कई और  
निमंत्रण आये हैं, जन्दन और ओवरसफ्रेडि से । बहुत नहीं वह सब किस  
तरह होगा । आपने पूरे शाकियों से काम में लगाई ।

हम १५ जून से ३० सितम्बर तक गोएकियों में होंगे । अगर GRENoble  
की प्रदर्शनी तब हुई तो लिखना । गोएकियों इतनी ही है । हम १० जून तक यौसा  
में ही होंगे । फिर तीन दिन GRENoble होते GARBIE पहुँचेंगे । पत्र लिखें । भारत  
भवन के बारे में संपर्क संग्रह के बारे में आपने धार्य के बारे में पूरा समाचार दे  
बस आज इतना ही, या बहुत लंबे से, आप सब को —

— राजा



Paris, February 16, 1982 -

Dear Geeta -

Following my last letter dated Jan 22, 1982, I am sending you here with enclosed two new sets of transparencies of the paintings which are being sent this week to Delhi for the 5th Triennale India.

If they present some interest & can be used, I will be happy. However, I will be grateful if they can be recuperated & sent back to me - ~~they~~ <sup>they</sup> ~~after use~~ may be along with the 5 others <sup>sets</sup> sent to Nirmal Ji.

I have been so busy with the Stockholm OR Festival & other engagements here & feel real sad, having missed the inauguration of Bharat Bhawan in Bhopal.

Please write. Warmest regards

P.S. Enclosed India news. ~~Many~~ <sup>This is a</sup> my ~~writing~~ <sup>strange land</sup> about Indian art here. But so few writings seem relevant.

आगे बढ़ गई है। ~~इससे बड़ी कुछ दि~~  
~~भी मैं मरने के आगे नहीं लगे~~  
 भी मरने शायद उसे दिसने देगा  
 जाना होगा। फिर ~~किसी~~ मैं भी इसी  
 तरह प्रदर्शनी है और गोविन्द भी  
 शामिल है। इस बारे में दिसने निकला  
 सिर्फ यही कहना चाहता हूँ कि तैयारी  
 अच्छी तरह करना। यहाँ भी निन्दनी  
 बहुत करिब है। वास्तव में चित्रपटों  
 के लिये।

मेरा 2016 भावी का पत्र मिला होगा

30 अक्टूबर 1982

प्रिय सचिदा

तुम्हारे दो पत्र मिले। ~~पहले~~ पहले  
 पत्र से दिल्ली निवास के समाचार  
 और फोटो पाकर बड़ी खुशी हुई।  
 इस समय मुझे आलम भी गया  
 है मैं चित्र समय पर पहुँचे आ  
 रहि। है दिसने एक बाल रियडर से  
 पत्र मिले और 'दुर्गा' डूँ के  
 पत्र पसन्द आये। अभी कटलाग  
 भी आया ~~मिस्टर~~ है + कुछ कुछ  
 पर गेो के अपना चित्र देख कर  
 लगा कि दिल्ली के ~~किसी~~ मैं  
~~हुँ~~ ~~यहाँ~~ है। के वाले ~~कभी~~ ~~कभी~~  
~~अधिक~~ ~~काले~~ वाले भले नहीं।

दोस्तों दो पत्र से आलम हुआ कि लक्ष्मी  
 मित्रों का भी प्रदर्शनी कुछ ~~मैं~~ के लिये